

125th Anniversary of The Scindia School

The Scindia School is a pre-eminent centre of learning, producing global leaders with Indian ethos. The School was founded by HH Maharaja Madhavrao Scindia I in 1897 as the Sardars' School for educating the sons of Jagirdars and Chieftians as the administrators of tomorrow.

In 1908, the Sardars' School was shifted out of Phool Bagh into the Gwalior Fort. The visionary HH Maharaja Jiwajirao Scindia transformed it into a modern public residential school. The Sardars' School, renamed as the Scindia School opened its door to the public on July 1, 1933. The School was also the first school in the country to include IT in its curriculum in the year 1984. The first four boys who appeared for the CBSE Class XII computers exams were from the Fort. The computerization and technology leadership were possible under the astute leadership of HH Maharaja Madhavrao Scindia II. Today the School stands tall with its new age pedagogies, inculcating globalization and environmental awareness under the able guidance of the Board led by HH Maharaja Jyotiraditya Scindia.

Nestled in history of India's greatest impregnable fort, the School is transforming the lives of its students to become ethical and righteous citizens in global world, yet remain firmly rooted in Indianness "Astachal" the daily practice of meditation, self-reflection and introspection to the setting sun, continues to bind the generations of Scindians. This evening assembly engulfs each student in deep contemplation and individual prayer for elevating the soul.

The value of service before self describes every student passing out from this hallowed portal. Two villages have been totally transformed by the School social service society, Sonsa and Nathukapura. The students go out with an enhanced sense of sensitivity towards the needy in the community and carry it through their lives as active givers in society.

Fittingly, in keeping with the historic setting, the School has also made history in many ways. It was a founder member of the Indian Public Schools Conference. The School is a member of the acclaimed prestigious international organization Round Square Conference involved in social service across the world. It also proved an inspiring influence for other Residential Schools to evolve and grow.

The Fort Biosphere converges to include in its aspirational curriculum-Eco park to sensitize the students about the richness

and value of local flora and fauna to conserve the ecology. It has a mission to try to fill up its Taals(lakes) as a part of water conservation to be able to give back to city the water in some years.

This year, the Scindia School celebrates its 125th year anniversary, and hopes to reaffirm and revitalize its commitment to being a school of eminence for young Indians as they evolve in becoming responsible and committed citizens in service of the country and the world.

Scindians have grown to hold positions of responsibility in many arenas of human endeavour excelling in technology, infrastructure, the arts, media, industry, service, the armed forces, the civil services and continue to serve both at the national and international levels.

Academic excellence apart, the school champion's games and sports as equally important elements of character building. All inter house matches are played with high intensity yet healthy rivalry to generate a sense of discipline and sportsman spirit. Activities unify the boys who come from different parts of the country having different mother tongues and diverse cultural backgrounds. They live together happily learning not only academics and curriculum, but also they develop understanding and appreciation for each other, they imbibe the virtues of adaptability and humaneness, a spirit of sharing love and affection for common humanity. All that becomes a binding force, which goes a long way in their life, which drives them, and propels them to act for the welfare of the society.

The stamp design is a beautiful se-tenant form, depicting the historic Madhav Pavilion, with an inset of the founder, overlooking the sprawling greens, which has been inspirational in shaping strong minds in a physically fit body to evolve as individuals with ethical character. The design also depicts the transformation journey of every Scindian who is a global citizen but firmly rooted in Indian Traditions.

Department of Posts is delighted to issue Commemorative Postage Stamp on the 125th Anniversary of The Scindia School and appreciates its endeavour to excel in the field of Academics.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure: Sh. Sankha Samanta

Cancellation Cachet : Sh. Sankha Samanta

Text : Referenced from content provided by Proponent



भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



सिंधिया स्कूल की 125 वीं वर्षगांठ
125th ANNIVERSARY OF THE SCINDIA SCHOOL



विवरणिका BROCHURE

सिंधिया स्कूल की 125 वीं वर्षगाँठ

सिंधिया स्कूल शिक्षा का एक केंद्र है, जो भारतीय लोकाचार के साथ वैश्विक नेताओं को तैयार करता है। इस स्कूल की स्थापना महाराजा माधवराव सिंधिया प्रथम ने सरदार स्कूल के रूप में वर्ष 1897 में करवाई थी, ताकि जागीरदारों और सरदारों के पुत्रों को भविष्य के प्रशासकों के रूप में शिक्षित किया जा सके।

वर्ष 1908 में, सरदार स्कूल को फूलबाग से ग्वालियर किले में स्थानांतरित कर दिया गया था। दूरदर्शी महाराजा जीवाजीराव सिंधिया ने इस स्कूल को एक आधुनिक सार्वजनिक आवासीय विद्यालय में बदल दिया। सरदार स्कूल, जिसका नाम बदलकर अब सिंधिया स्कूल कर दिया गया था, ने 1 जुलाई, 1933 को अपने दरवाजे जनता के लिए खोल दिए। सिंधिया स्कूल वर्ष 1984 में अपने पाठ्यक्रम में आईटी को शामिल करने वाला देश का पहला विद्यालय भी बना। सीबीएसई कक्षा XII की कम्प्यूटर परीक्षा में बैठने वाले पहले चार लड़के फोर्ट विद्यालय से थे। महामहिम महाराजा मधवराव सिंधिया द्वितीय की कुशल अगुवाई के कारण कम्प्यूटरीकरण और प्रौद्योगिकी नेतृत्व संभव हो सका। आज यह विद्यालय महामहिम महाराजा ज्योतिरादित्य सिंधिया के कुशल नेतृत्व वाले बोर्ड के मार्ग दर्शन में वैश्वीकरण और पर्यावरण जागरूकता को शामिल करते हुए अपने नए युग की अध्यापन-कला के साथ खड़ा है।

भारत के इतिहास में दर्ज एक महानतम अभेद्य किले में स्थित यह विद्यालय अपने छात्रों के जीवन को वैश्विक दुनिया में नीतिपरक एवं न्याय परायण नागरिक बनाने के लिए बदल रहा है। इसके साथ-साथ, "अस्थाचल"—आत्मचिंतन, ध्यान एवं ढलते सूरज के साथ आत्म निरीक्षण का यह दैनिक अभ्यास पीढ़ीदर-पीढ़ी "सिंधियन" को संगठित करने में सक्षम रहा है। 'स्वयं से पहले सेवा' इस प्रतिष्ठित विद्यालय से निकलने वाले प्रत्येक विद्यार्थी की पहचान है। विद्यालय की सामाजिक सेवा सोसाइटी ने दो गांवों, सेंसा और नाथुकापुरा को पूरी तरह से बदल दिया है। यहां से उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों में समाज के जरूरतमंद लोगों के प्रति संवेदनशीलता का भाव बढ़ जाता है और वे समाज में सक्रिय दाताओं के रूप में अपने भीतर इस भावना को जीवन भर बनाए रखते हैं। संयोग से ऐतिहासिकता परिवेश को ध्यान में रखते हुए, इस विद्यालय ने कई तरीकों से इतिहास रचा है। यह इंडियन पब्लिक स्कूल्स कॉन्फ्रेंस के संस्थापक सदस्य थे। यह स्कूल, विश्वभर में सामाजिक सेवा में शामिल प्रशंसित प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय संगठन राउंड स्क्वायर कॉन्फ्रेंस का सदस्य है, जो विश्वभर में सामाजिक सेवा के लिए जाना जाता है। यह स्कूल अन्य आवासीय विद्यालयों के विकास और आगे बढ़ने के लिए प्रेरणादाई सिद्ध हुआ है। फोर्ट बायोस्फीयर, पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए स्थानीय वनस्पतियों और जीवों की समृद्धि और महत्व के संबंध में छात्रों को संवेदनशील बनाने के लिए अपने महत्वाकांक्षी पाठ्यक्रम - ईको पार्क में शामिल करने के लिए अभिसरित हैं। इसका मिशन तालों (झीलों) को भरने का प्रयास करना है ताकि

शहर को कुछ वर्षों में पानी दिया जा सके। इस वर्ष, सिंधिया स्कूल अपनी 125 वीं वर्षगांठ मना रहा है और उम्मीद करता है कि युवा भारतीयों के लिए एक प्रतिष्ठित विद्यालय होने की अपनी प्रतिबद्धता को पुनः पुष्ट और पुनर्जीवित करेगा ताकि वे देश और दुनिया की सेवा में जिम्मेदार और वचनबद्ध नागरिक बनने हेतु विकसित होंगे।

प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे, कला, मीडिया, उद्योग, सेवा, सशस्त्र बलों, सिविल सेवाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों वाले पदों पर काम करते हुए, "सिंधियन" मानव प्रयास के कई क्षेत्रों में जिम्मेदारी के पदों पर आसीन हुए हैं तथा इन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सेवा करना जारी रखा है।

शैक्षणिक उत्कृष्टता के अलावा, विद्यालय खेल और क्रीडा को भी बराबर रूप से चरित्र निर्माण को महत्वपूर्ण तत्व मानता है। अनुशासन एवं खेल भावना विकसित करने के लिए सभी इंटर हाऊस खेल पूरे जोश और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ खेले जाते हैं। क्रियाकलाप विभिन्न मातृभाषाओं एवं विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले देश के विभिन्न भागों से आने वाले लड़कों को एकजुट करते हैं। वे न केवल शिक्षा और पाठ्यक्रम सीखते हुए खुशी से एक साथ रहते हैं बल्कि उनमें एक दूसरे के लिए समझ और प्रशंसा भी विकसित होती है, वे अनुकूलनशीलता और मानवता के गुणों को आत्मसात् करते हैं, सामान्य मानवता के लिए प्यार और स्नेह साझा करने की भावना रखते हैं। ये सब एक बाह्यकारी शक्ति बन जाती है, जो कि यह उनके जीवन में बहुत आगे तक रहती है और उन्हें समाज के कल्याण के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

यह स्टाम्प एक सुंदर सोविनियर शीट है, जिसमें ऐतिहासिक माधव मंडप को दर्शाया गया है, जिसमें संस्थापक की छवि के साथ हरियाली दिखाई देती है, जो नैतिक चरित्र वाले व्यक्तियों के रूप में विकसित होने के लिए शारीरिक रूप से फिट शरीर में मजबूत दिमाग को आकार देने में प्रेरणादायक रही है। यह डिजाइन सिंधिया स्कूल के प्रत्येक विद्यार्थी की परिवर्तनकारी यात्रा को भी दर्शाता है, जो एक वैश्विक नागरिक है लेकिन दृढ़ता से भारतीय परम्पराओं में निहित है।

डाक विभाग सिंधिया स्कूल के 125वें स्थापना दिवस पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता व्यक्त करता है और शिक्षा के क्षेत्र में सिंधिया स्कूल द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट प्रयासों की सराहना करता है।

आभार :-

डाक टिकट/एफडीसी/विवरणिका : श्री शंखा सामंत
विरूपण केश : श्री शंखा सामंत
पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

स्टाम्प मूल्य	: 500 पैसे
Stamp Denomination	: 500 p
सोविनियर शीट मूल्य	: 2000 पैसे
Souvenir Sheet Price	: 2000 p
मुद्रित सोविनियर शीट	: 215300
Souvenir Sheet Printed	: 215300
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover, Miniature Sheet and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00